प्रकृति के सौंदर्य की कहानी कहते 'कला के रंग'

क्रिएट स्टोरीज की दो दिवसीय एक्जिबिशन

दबंग रिपोर्टर ■ इंदौर

कला का निराला अंदाज, प्रकृति का सौंदर्य, मां की ममता, मनमोहक हरियाली, झरने, मछलियों का शांत जीवन, महिलाओं की आजादी जैसे कई विषयों पर चित्र कैनवास आर्ट गैलेरी में शनिवार से आयोजित दो दिवसीय प्रदर्शनी 'कला के रंग' में प्रदर्शित किए गए हैं।

क्रिएट स्टोरीज द्वारा आयोजित एक्जिबिशन में प्रदेश के 43 कलाकारों ने 88 पेंटिंग्स एग्जिबिट की हैं। इसमें पेंटिंग, ऑयल पेंटिंग, म्यूरल पेंटिंग, डॉट पेंटिंग, डिजिटल पेंटिंग, स्केच, पोर्ट्रेट्स, फोटोग्राफी, वेस्ट फ्रॉम बेस्ट हैं। थीम ओपन रखी गई थी, जिसमें कलाकारों ने खुलकर अपनी कल्पनाओं को पंख दिए। इसमें 4 से 57 साल तक के कलाकारों ने हिस्सा लिया है, जिनमें इंदौर के अलावा भोपाल, गुना, रीवा, उज्जैन, झाबुआ, गुना के कलाकार शामिल हैं। इस मौके पर सभी आर्टिस्ट्स और विजिटर्स ने राष्ट्रहित में मतदान के लिए सिग्नेचर बोर्ड 'वोट फॉर बेटर इंडिया' पर हस्ताक्षर कर शपथ ली।

पहाड़ों की खूबसूरती

प्रदर्शनी का उद्घाटन फिल्म 'चक दे इंडिया' फेम और पूर्व [illegible] हॉकी टीम के कोच मीररंजन नेगी ने किया। एक्जिबिशन में प्रशस्ति राठिया ने फूलों, हरियाली, गुलाबी आसमान के साथ पहाड़ों की खूबसूरती दिखाई है, वहीं रीना नागोरिया ने इमारतों की सुंदरता दिखाई। अनन्या मित्तल ने चांद की रोशनी में डॉल्फिन के जीवन को व्यक्त किया है। फलक जैन ने महिला की खूबसूरती के साथ उसकी आजादी को रचा है। अर्चना पाटीदार ने रंगों से भगवान बुद्ध को दिखाते हुए शांति का संदेश दिया है।

नई टेक्निक जानने और सीखने का अवसर

इस मौके पर सीनियर आर्टिस्ट शुभा वैद्य ने कलाकारों से कहा कि यह एक ऐसा मंच है जिसमें प्रतिभागी को अपनी कला प्रदर्शित करने के साथ सीखने का मौका भी मिलता है, साथ ही कुछ नई टेक्निक जानने और सीखने को मिलती है। उन्होंने कहा कि सभी प्रतिभागियों का अपना एक विभिन्न प्रकार का काम है और किसी को भी किसी से तुलना नहीं की जा सकती, क्योंकि हर कलाकार का अपना दिमाग और इमेजिनेशन होती है, जिसे वो कला के रंगों से उकेरता है, यहां ज्यादातर नॉन प्रोफेशनल आर्टिस्ट की इमेजिनेशन के साथ उनकी कला के रंग बिखरे हैं। यह प्रदर्शनी रविवार दोपहर 12 से शाम 7 बजे तक सभी के लिए खुली रहेगी।

शिक्षकों और विद्यार्थियों ने ली मतदान करने की शपथ

दबंग रिपोर्टर ■ इंदौर

सांवेर रोड स्थित लाल बहादुर शास्त्री इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एंड मैनेजमेंट कॉलेज द्वारा शनिवार को छात्र-छात्राओं सहित स्टाफ को मतदान करने की शपथ दिलाई गई। इस मौके पर कॉलेज के निदेशक डॉ. अशोक मित्तल ने सभी विद्यार्थियों सहित समस्त स्टाफ को लोकतंत्र में मतदान के अधिकार का महत्व बताया। इस अवसर पर प्रो. वर्षा शास्त्री व प्रो. दिनेश यादव सहित बड़ी संख्या में विद्यार्थी व स्टाफ उपस्थित था।

रैली निकालकर किया जागरूक

शासकीय महिला पॉलिटेक्निक महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना स्वयंसेवकों द्वारा चोइथराम मंडी व रीजनल पार्क में शनिवार को मतदाता जागरूकता के लिए रैली निकाली गई और नुक्कड़ नाटक से लोगों से मतदान करने की अपील की गई।

कंपनी लॉ ट्रिब्यूनल में कंपनी सचिव के लिए अवसर पर चर्चा

इंदौर। भारतीय कंपनी सचिव संस्थान के इंदौर चेप्टर द्वारा शनिवार को एक होटल में सेमिनार का आयोजन किया गया। चेप्टर चेयरपर्सन सीएस रुचि जोशी मेड़तिया ने बताया कि सेमिनार में कंपनी सेक्रेटरी सीएस सावित्री पारेख ने कंपनी अधिनियम व अन्य विषयों पर चर्चा की। इस मौके पर इंदौर के प्रेक्टिसिंग कंपनी सेक्रेटरी सीएस डॉ. डीके जैन ने नेशनल कंपनी लॉ ट्रिब्यूनल में कंपनी सचिव के लिए अवसरों के बारे में बताया। कार्यक्रम में 125 से अधिक कंपनी सचिव उपस्थित थे।

आपस की बात

मां और भूख

कहीं कुछ ऐसा पढ़ा था जो 'मां' के लिए बहुत सटीक बैठता है। उससे यह एक रहस्य खुलता है कि प्रकृति की सारी व्यवस्था में मां और बच्चे की भूख का क्या संबंध है? यह केवल मां ही होती है जिसे तुरंत पता चल जाता है कि बच्चा भूखा है और उसकी भूख न केवल शांत करना है बल्कि उसे तृप्त भी करना है। मां जब गोल-गोल रोटी बेलती है तो उसकी गोल रोटी इसलिए गोल आकार लेती है, क्योंकि उसके पीछे उसका यह गहन मकसद होता है कि इस गोल सिंकी हुई रोटी को देखकर उसका बच्चा आकर्षित होकर उसे खाए और तृप्त हो।

जो पढ़ा था वह इस प्रकार है- प्रकृति की सारी मांएं। पंचतंत्र की सारी मांएं। कोई अपनी चोंच में दाना लिए हुए है। कोई अपने मुंह में दांत में शावक का भोजन। मां और रोटी लड़ रहे हैं। रोटी हारती रही है, यही मां के हाथों रोटी के सटीक गोलाई में बदल जाने का रहस्य है। मां के हाथों की गोल-गोल रोटी को बनते और फूलते देख प्रत्येक हर बच्चा यह आश्चर्य करता है कि मां इतनी परफेक्ट गोल रोटी कैसे बेलकर बना लेती है। उसका सीधा जवाब ढूंढें तो यही मिलेगा कि मां और बच्चे की भूख का परस्पर बहुत गहरा व निःस्वार्थ संबंध है। आश्चर्य यह है कि मां को याद करने तथा उसके द्वारा अपने बच्चे की भूख शांत करने के लिए शिशु के गर्भ में नाल बनती है। यही गर्भनाल बनकर और मां के आहार के साथ यह जुड़कर सीधे-सीधे मां और बच्चे की भूख का रिश्ता जुड़ हो जाता है। यह और भी अधिक आश्चर्यजनक है कि गर्भनाल का यह चिह्न जीवनभर हमारे साथ बना रहता है। शरीर में नाभि की उपस्थिति से यह पता चलता है कि कभी इसी से जुड़ी नाल के कारण ही मां निरंतर आहार देती रही है और उस समय भी शिशु की भूख को मिटाती रही है। वह आहार का रस स्वयं उपभोग न कर उससे अपने गर्भस्थ शिशु का पोषण करती है, उसे कभी भूखा नहीं रहने देती। यह प्राकृतिक व्यवस्था मां और शिशु के बीच एक सच्चा रिश्ता का आधार है। उसी से पोषण प्राप्त कर शिशु पुष्ट होता रहता है। भले ही शिशु के जन्म के बाद मां और शिशु के बीच यह आहार संबंधी लेन-देन वाली नाल काट दी जाए पर, वह कभी मौजूद थी, इसका प्रमाण जीवनभर हमारे शरीर में बना रहता है। इससे भी अधिक यह चिह्न अर्थात नाभि शरीर के एक सच्चा आधार के रूप में बनी रहती है। मां और शिशु के बीच शिशु को आहार देने वाली इस गर्भनाल का आजकल तो चिकित्सकीय महत्व भी बहुत बढ़ गया है। इसे आजकल स्टेम सेल थैरेपी कहा जाता है। कहते हैं और यह प्रमाणित भी हो चुका है कि जन्म के समय काटी जाने वाली इस गर्भनाल में ऐसे सेल मौजूद होते हैं जो जानलेवा व असाध्य रोगों के उपचार की महत्वपूर्ण चिकित्सा के रूप में साबित हो चुके हैं। कई ऐसे लाइलाज (दवाइयों व सर्जरी द्वारा भी उपलब्धि न हो पाने वाले) केस हैं जिनमें रोगी का उपचार स्टेम सेल्स से किया गया और वह स्वस्थ हो गए। कोशिश तो यह भी हो रही है कि शिशु के जन्म के साथ उसकी मां से जुड़ी इस गर्भनाल को फेंका न जाए बल्कि उसे सुरक्षित कर रख लिया जाए, जिससे यदि भविष्य में उसी शिशु के एक वयस्क व्यक्ति होने के बाद उसे कोई गंभीर रोग हो जाए तो उसका उपचार किया जा सके। यह उपचार बहुत कारगर तो साबित हो ही चुका है।

मीना नागपाल
nagpal.meena@yahoo.com

शरीर में नाभि की उपस्थिति यह प्रमाणित करने तथा बताने के लिए पर्याप्त है कि मां ने तो गर्भ में भी अपने शिशु को भूखा नहीं रहने दिया। प्रकृति की यह ऐसी व्यवस्था है जो यह निरंतर बताने का एक सच्चा साक्ष्य है कि मां ने कभी अपने बच्चे की भूख की अनदेखी नहीं की, तब यह कैसे संभव होता है कि उसी मां को उसकी निःशक्त व असहाय अवस्था में भोजन नहीं दिया जाता, उसकी प्यास नहीं बुझाई जाती। यहां तक कि उसे शारीरिक यातना तक दी जाती है। इन सबको रोका जाना चाहिए। अपने शरीर में उपस्थित उस नाभि के दर्शन करें और नित्य प्रति उस पर ध्यान केंद्रित कर उस मां का भी ध्यान करें जिसने आपको अपनी निःसहाय व अबोध तथा मजबूर अवस्था में अपने आहार का अमृत रस पिला-पिलाकर पोषित किया। शायद यदि आप अपनी नाभि पर कुछ पल ही ध्यान लगा लेंगे तो कभी मां की उपेक्षा नहीं कर पाएंगे।